Jan 2020 - Mar 2020, Vol 6, No. 1, 64-71 ISSN : 2394 -9449

Electronic Journal of Advanced Research

An International Peer review E-Journal of Advanced Research

Research Articles

समकालीन कहानी मे चित्रा मुद्गल का योगदान

शिप्रा द्विवेदी[1]

1. सह. प्राध्यापक (हिन्दी) शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

Received : 10-Mar-2020	Revised : 22-Mar-2020	Accepted : 25-Mar-2020

सारांश :–चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों का कथ्य उनके आसपास के परिवेश से लिया हैं। वास्तव में उनके पास देखने की उदात्त दृष्टि है। उनकी कहानियों का कथावस्तु में विविधता है। जिसमें अनेक उतार चढ़ाव हैं। उनकी कहानियों में कथापकथन या संवाद के विविध रूप मिलते हैं। कहानी साहित्य में चित्रा मुद्गल सिद्धहस्त कलाकार हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से कहानी की कथा को संवादों के माध्यम से अंतिम हल तक पहुँचाया है।

चित्रा मुद्गल जी ने अपनी कहानियों में समाज के विविध धरातल पर जी रहे लोगों की समस्याओं को स्वर दिया है। समकालीन जीवन एव युग यथार्थ का खुरदुरापन उनकी कहानियों में मौजूद है। मौजूदा परिस्थिति, और उस परिस्थिति में स्त्री की स्थिति, नियति, व्यवस्था के खिलाफ रचनाओं में उठती चेतावनी, नारी जागृति, स्त्री चेतना तथा उसके लिए संघर्ष एवं प्रतिरोध उनकी रचनाओं की विशेषता है। जागरण जैसी संस्थाओं के साथ जुड़ने से उनकी अनेक सामाजिक समस्याओं से मुठभेड़ हुई। उससे निर्मित अनुभव एवं संवेदना उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि तैयार करती है। और लिखने के लिए ऊर्जा प्रदान करती है।

शब्द कुंजी : नारी जागृति, स्त्री चेतना, चित्रा मुद्गल

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी के साहित्यिक परिदृष्य में स्त्री परिधि से केन्द्र में आ रही हैं। सदियों से हाशिये पर स्थित यह वर्ग एक निर्णयात्मक स्थिति अख्तियार कर रहा है। जीवन के क्रूर कठिन नियति को झलते झेलते स्त्री बहुत जागरूक और व्यावहारिक हो गई हैं अब अन्ना करिनी और शकुन्तला ही लिखेगी वैसे रास्ता बहुत बीहड़ हैं। जिस वजह से उनकी यात्रा थमनी नहीं चाहिए क्योंकि महिला लेखन समय की जरूरत है। जो महिलाओं द्वारा महिलाओं को दृष्टि में रखकर समाज में उनके लिए परिभाषित मूल्यों एवं प्रतिमानों को परखता है। कभी कभी लेखिकाओं को सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कभी वे व्यंग्य के पात्र बन जाती है तो कभी उनका मूल्योंकन सही मायने में नही होता फिर भी नारी चेतना से अभिभूत लेखिकाएँ अपनी अनुभूतियों और एहसासों को चित्रित करना अपना फर्ज मानती है और आगे बढ़ती हैं।

इस सदी में अनेक सशक्त महिला कहानीकार हिन्दी साहित्य में आयी। इस प्रवाह में शषिप्रभा शास्त्री मालती जोषी, कृष्णा अग्निहोत्री, ममता कालियाद्व नासिक शर्माद्व सूर्यबालाद्व मैत्रेयी पुष्पाद्व मंजुला भगतद्व अलका सरावगीद्व राजी सेठ, प्रभा खेतान और चित्रा मुद्गल आदि प्रमुख रूप से सामने उभरकर आई। इन लेखिकाओं ने नारी मन की कसमसाहटद्व छटपटाहट, यौन वर्जनाओं को नकार ने के साथ स्वच्छन्द काम–सम्बन्धों को खुली स्वीकृति विवाह पूर्व एवं विवाहेत्तर यौन सम्बन्धों का चित्रण, समलैंगिक सम्बन्धों का चित्रण विवाह और प्रेम के वास्तविक सरोकारों की तलाश, कामकाजी नारी की समस्याएँ आदि प्रश्नों को उकेरा है। इस काल की लेखिकाएँ अपनी रचनाओं के माध्यम से नई पहचान खोज रही है यह किसी भारी परिवर्तन की निशानी का संकेत है। इस प्रकार वैविध्य से भरे जीवन की समस्याओं को ग्रहण कर उसे तराशकर जनमानस तक प्रेषित करने में लेखिकाएँ सक्षम हुई है। उनकी व्यावहारिक दृष्टि का परिणाम यह है कि उन्होनें मानव–जीवन की व्यापकता की अपेक्षा गहराई पर अधिक बल दिया है। इन में कुछ स्त्रीवादी लेखिकाएँ भी हैं, जिन्होनें स्त्री मुक्ति के लिए सराहनीय कार्य किए हैं। ये लेखिकाएँ पाश्चात्य दर्शन व नारीवाद से प्रभावित तो जरूर हुई हैं लेकिन इन लेखिकाओं में न तो पाश्चात्य नारीवाद को पुर्णतः अपनाया हैं और नही वहाँ के संस्कार को श्रेष्ठ मानकर स्वीकारा है। आज की व्यवस्था में परिवर्तन जरूरी हैं। स्त्रीवाद के मन की तहे खोल उन्हें आवाज दे रहा है। अंतः लेखिकाओं ने अपने रचनात्मक कौषल के द्वारा हिन्दी कथा साहित्य को संवेदनशील स्नेहार्द और मानवीय बनाया है। इसी कारण इनकी रचनात्मक बहुरंगी कलेवर हांसिल कर पाई हैं, जो लेखिकाओं की एक बहुत बड़ी उपलब्धि कही जाएगी।

समकालीन कहानी लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का योगदान :–

हिन्दी कहानी साहित्य में सन् 1980 के बाद नारी को केन्द्रित करके अनेक लेखिकाओं ने अपनी कलम चलाई है। उन्होंने नारी के स्वाभिमान उसकी पीड़ा, उसकी आशा, इच्छा, हार और जीत, सुख और दुःख की कहानियाँ लिखी हैं। इन कहानीकारों ने नारी जीवन के समस्त पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इन कहानियों में नारी ने अपने परंपरागत रूप से हटकर विद्वोही भूमिका दिखाई हैं और अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हुई हैं।समकालीन कहानी लेखिकाओं में चित्रा मृद्गल जी आधुनिक कहानी–साहित्य की बहुचर्चित लेखिका हैं। उन्होंने अपने अनुभवों को समाज के विभिन्न समुदायों के बीच रहकर विकसित किया हैं। चित्रा मृद्गल जी ने कहानी के साथ साथ उपन्यास और बाल साहित्य के क्षेत्र में भी अपना विशेष स्थान निर्मित किया है 'जहर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'इस हमाम में', 'गयारह लंबी कहानियाँ , 'जगदंबा बाबू गाँव हा रहे हैं, 'चर्चित कहानियाँ' , 'ब्यार उनकी मुठ्ठी में', 'जिनवर', 'केंचुल', 'भुख', 'मामला आगे बढ़ेगा अभी', और 'आदि–अनादि', (3 भाग) उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। इसके अलावा 'जंगल का राज'द्व 'सूझ–बूझ', 'नीति कथाएँ' , 'देश–देश की लोक कथाएँ' आदि कथा संकलन हैं।

उनकी कहानियों में बचपन में भरतीपुर की माटी में शैशव की अटखेलियों से लेकर युवा अवस्था में जिये–भोगे महानगरीय जीवन तक के सभी महत्वपूर्ण सरोकारों के मूल में उनकी आवेगमयी रागात्मक संवेदनाओं की ही अभिव्यक्ति हुई हैं। अपने समय की प्रायः सभी महत्वपूर्ण पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाषित और प्रशंसित ये कहानियाँ मुंबई से दिल्ली तक के लेखिका के बृहद रचना कर्म और भारत के संघर्षषील जन से उनके लगाव का प्रमाण हैं। 'चित्रा जी' ने समय की प्रवक्ता बनकर अपने युग की अभिव्यक्ति की हैं। चित्रा जी की अनेक कहानियाँ विशाल कैनवास पर उभरी तस्वीरें उनके महानगरीय अनुभवों के इंद्रधनुषी रंगो और जीवन को मूर्तिमन्त करते हैं।

वैयिक्तिक जीवन से लेकर सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक और धार्मिक भूमिकाओं में अभिव्यक्त उनका विद्रोह और उनकी निर्भीक स्पष्टवादिता उनके जीवन भाव–बोध और अक्षम्य साहस की परिचायक है। ''आकृष्ट सृजन के लिए प्राणाहुति का अदम्य साहस और सच्चे कलाकार की सौन्दर्य–चेतना कृतियों के उपादान हैं। भारतीय संस्कृति के व्यापक जीवन दर्षन से अनुप्राणित उनकी वैचारिक मान्यताएँ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में नवीन व्यावहारिक मान्यताओं के परम्परागत मूल्यों में सामंजस्य स्थापित कर नूतन जीवन दर्षन युग बोध को प्रस्तुत करती हैं'' (1)

अन्य महिला साहित्यकारों की तुलना में चित्रा जी के पात्र इतने सजीव एवं साहित्यकारों की तुलना में चित्रा जी के पात्र इतने सजीव एवं स्वाभाविक हैं कि वह मानने को जी नहीं चाहता कि वे उनके कल्पना लोक की सृष्टि है। इन पात्रों का चयन लेखिका ने अपने आसपास के परिवेश के आधार पर किया है। जिसके कारण वे सजीव बन पड़े हैं। चित्रा मृद्गल जी आधुनिक युक की परिवर्तित नवचेतना की प्रमुख रचनाकार हैं। विषय वस्तु की दृष्टि से उनकी कहानियाँ विस्तृत और विविधता से भरपूर हैं। आधुनिक जीवन के सभी समविषम पक्ष उनकी कहानियों में मिलते हैं। आस्था, आक्रोश, प्रेमानुभूति, संत्रास, आँचलिकता, शोक–हर्ष, सामाजिक चिन्तन, धार्मिकता का आडंबर, शोषण, परंपरागत मान्यताएँद्व नारी चेतना नौकरीपेशा नारी की समस्या, अकेलापन, ऊब नारी की मानसिक दशा, फिल्मी ग्लैमर, विज्ञापन क्षेत्र में नारी की स्थिति, टी.वी. का बढ़ता महत्व और उसका दुष्प्रभाव वृद्धों की समस्याद्व वेष्यावृत्ति व्यवसाय से जुड़ी नारी की दर्दनाक स्थिति बच्चों की कोमल मानसिकता आदि अलग अलग विषयों को उठाकर उन्होंने श्रेष्ठ रचनाएँ प्रस्तुत की हैं।

चित्रा जी की निरीक्षण दृष्टि अति सूक्ष्म है, उन्होंने समाज के विभिन्नि वर्गो की नारी के मूलभूत अधिकार व अपनी अस्मिता के प्रति स्वयं नारी कितनी सजग है परिवार तथा समाज में वह किस प्रकार से उपेक्षित रही हैं उसे अपने अधिकारों के लिए किस प्रकार लड़ना पड़ता हैं यह प्रस्तुत किया हैं। चित्रा जी की कहानियों का उद्देष्य यह रहा है कि ''अशिक्षा, शोषण और रूढ़ियों के अन्धकार में जकड़ी हुई झुग्गी–झोपड़ी की स्त्रियाँ अपने पाँवों को पहचान सके और उनके नीचे की जमीन तलाश सकें।'' (2)

साथ ही उन्होंने समकालीन यथार्थ को जिस अद्भूत भाषिक संवेदना के साथ अपपनी कहानियों में चित्रित किया है वह चकित कर देनेवाला है। उनकी कहानियाँ अनुभव वैविध्य एवं अनुभूति विस्तार की ओर संकेत करती है। उनकी रचना धर्मिता का क्षेत्र और दायरा विस्तृत है जिससे उन्होंने स्त्री में अस्तित्व बोध जगाकर उसमें आत्मविश्वास और दृढ़ व्यक्तित्व प्रदान किया हैं। कामकाजी नारियों की जिन्दगी के बारे में भी लेखिका ने कहानियाँ लिखी हैं। 1964 से उनकी कहानी यात्रा इस अंदाज से आगे बढ़ी कि आज हिन्दी कहानी का इतिहास बगैर उनके जिक्र के पूरा हो पाना मुमकिन नहीं है। आदि–अनादि के 3 भागों में चित्रा मुद्गल की 1964 से 2007 तक की सभी कहानियाँ संग्रहित हैं। इन कहानियों में चित्रा मुद्गल जी के क्रमिक विकास की झलक तो मिलेगी ही, साथ ही उनकी विषिष्ट अभिव्यंजना की विशिष्ट भाषिक सामर्थ की अनूठी कथा शैली तथा बेजोड़ षिल्प के दर्षन भी होते हैं।चित्रा जी विज्ञान भूषण से बातचीत में कहती हैं कि ''कहानी लिखना एक अनिश्चित और विचित्र घटना की तरह

घटित होती हैं मेरे भीतर, हर बार बहुत ही संश्लिष्ट प्रक्रिया होती हैं– कहानी की बाहरी–भीतरी घर्षण और जिरह से उपजे अनंत विचारों के प्रवाह में कहानी का ढाँचा बनता हैं।'' (3)

भाषा और शिल्प की दृष्टि से चित्रा मुद्गल जी अपनी समकालीन लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। चित्रा जी उस परंपरा की पक्षधर है जो साहित्य में कलात्मकता की अपेक्षा भावात्मकता पर अधिक बल देती हैं। कहानी के सीमित दायरे में भी चित्रा जी ने जहाँ एक ओर चरित्रों के आंतरिक मनोभावों को सफलतापूर्वक व्यक्त किया है वहीं उनके बाह्य रूपरंग को किसी कुशल रेखा चित्रकार की भाँति बड़ी सूक्ष्मता के साथ उकेरा है, शायद इसका कारण यह हो सकता है कि चित्रा जी पहले अच्छी चित्रकार भी थी। शब्द चयन पर चित्रा जी का इतना अधिकार हैं कि थोड़े से चुने हुए शब्दों में पात्रों की सजीव आकृति को कल्पना के नेत्रों के सामने उपस्थित कर देते हैं।

चित्रा मुद्गल को जिन महिला रचनाकारों ने प्रभावित किया है उनमें कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, ऊषा प्रियंवदा आदि प्रमुख लेखिका हैं। लेखन चित्रा जी के लिऐ केवल आत्मरति मात्र नही वरन् सामाजिक दायित्व और समाज की जड़ स्थितियों पर प्रहार करने का माध्यम है। अपने लेखन का उद्देष्य वे पाठकों को जागृत करना मानती हैं। ''अपनी चेतना को कहानियों के रूप में प्रस्तुत करनेवाला हेमिंग्वे का आदर्श उन्हें प्रिय हैं, इसलिए 'आत्म–साक्षात्कार' उनके लेखन का उद्देय हैं। चित्रा मुद्गल साहित्य को एक साधनाद्व एक तप मानती हैं।'' (4) उनकी ही समकालीन लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रा मुद्गल जी के लिए 'गॉडमदर' शब्द का प्रयोग किया है। जो दर्शाता है कि चित्रा जी कितनी लोकप्रिय कहानीकार हैं।

समकालीन महिला लेखन में चित्रा मुद्गल उस धारा का प्रतिनिधित्व करती है जो समाज में स्त्री की स्थिति के साथ स्त्रियों को उनके उत्तरदायित्वों के प्रति भी सजग कराती हैं। उनके साहित्य का प्रमुख स्वर नारी मुक्ति हैं उनकी यह नारी मुक्ति स्त्री को सामाजिक परिवेष में दोयमता के स्थान से मुक्त करके समाज में पुरुषों के समकक्ष स्थान दिलाने के लिए कृत संकल्प हैं। चित्रा जी स्वस्थ नारीवाद से प्रेरित समन्वयवादी लेखिका हैं। उनके कथा साहित्य में एक ओर पुरुष प्रधान समाज से टकरा रही हैं वहीं दूसरी ओर अपने चारो ओर फैले अन्याय शोषण, अत्याचार, अमानवीयता का खुला प्रतिवाद भी करती हैं।

चित्रा जी नारीवाद अथवा स्त्री मुक्ति के नाम पर परिवारों को तोड़ने में नहीं बल्कि स्त्री–पुरुष के आपसी सामंजस्य से उन्हें जोड़ने में विश्वास रखती हैं। कई स्थानें पर लेखिका पुरुष की पक्षधर बनकर सामने आई हैं। श्री प्रकाश के मुताबिक – ''कथाकार चित्रा मुद्गल की पहचान विशेष तौर पर लेखिकाओं के बीच ऐसे रचनाकार के रूप में हैं, जिसने अपने लेखन के

लिए कई–एक समकालीन लेखिकाओं (या लेखकों) की तरह परिवार और पति–पतनीव संतान टूटते –नते तीखे–मीठे सम्न्धों या रिष्तों –नातों के दर्जनों अन्तईन्द्व भरे यथार्थ के प्रति रूमानी , भावुक तथा शैलानी दृष्टि रखते हुए उसे जस का तस चित्रित करते जाने की जगह अन्य दूसरे व्यापक सामाजिक अन्तविरोधों को उठाया है। सहज ओर स्वस्थ जीवन से वंचित निम्नवर्गीय समाज के प्रति चिन्ता जाहिर की हैं, उसकी तकलीफों से भरी जिन्दगी को सामने लाना चाहा है । '' (5)

चित्रा मुद्गल ने कहानी–लेखन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। व्यक्तिगत, पारिवारिक या सामाजिक जीवन में अधिकार और उत्तरदायित्व एक ही सिक्के की दो बाजू हैं। अधिकारों की चर्चा तो हर कोई करता है, परन्तु उसी समय व्यक्ति अपने उत्तरदायित्यों को भूल जाते हैं। इस काल में चित्रा मुद्गल एक ऐसी लेखिका के रूप में उभरी हैं जो इस प्रवृत्ति से अलग स्त्री के उत्तरदायित्यों की भी चर्चा करती हैं। चित्रा जी की कहानियों का मूल स्वर भले ही नारी चेतना का हो किन्तु परिस्थिति की मार झेल रहे पुरुषों के प्रति भी लेखिका के हृदय में सहानुभूति हैं। धनंजय कुमार के अनुसार– ''उनकी कहानियों में स्त्री–विमर्श के नाम पर मर्दवादी खलसत्ता के आतंक और उससे संघर्ष की दास्ता ही नहीं होती अपितु इससे इतर भी स्त्री–चरित्रों के विविध रूप समाज के अलग–अलग आर्थिक तबके में उनकी स्थिति, अलग अलग वय की उसकी दिक्कतें मुखर हो उठती हैं। इन कहानियों में मानवीय परेशानियों के विरुद्ध एक उदघोष हैं परेषानी चाहे स्त्री की हो दलित की हो बच्चे या फिर वृद्ध की ।इन सभी कठिनाइयों की तह में उतरने की कोशिश करती इनकी कहानियाँ व्यवस्था के विद्रूप को उसके अमानवीय नृशंस रूप को बेनकाब करती हैं।'' (6)

आधुनिक महिला कहानीकारों ने जो कहानियाँ लिखी हैं, उन्होंने अपनी कृतियों पर समय की मुहर लगाई हैं। अवश्य ही ये समय के सच्चे दस्तावेज हैं। नवम् एवं अंतिम दशक में अनंक सशक्त कृतियाँ मिलती हैं। जिनमें परिवर्तनशील जीवन का लेखा जोखा तो हैं ही विषय की विविधिता और गुणात्मक दृष्टि से भी उल्लेखनीय रचनाएँ है। दसवें दशक की हिन्दी कहानियों में नारी चेतना के परिवर्तित रूपों की मनोरम छवि मिलती हैं। इन महिला कहानीकारों में चित्रा मुद्गल जी ने अपने विशिष्ट योगदान के द्वारा अपनी अलग पहचान बनाई हैं। स्वतंत्रता के पश्चात हिन्दी की महिला लेखिकाओं ने नैतिक विचारों को महत्व दिया है। आधुनिक युग में समय के साथ साथ सामाजिक समस्याएँ और मानवीय मूल्यों में तेजी की प्रक्रिया चल रही है। इस दृष्टिकोण से बदलते हुए जीवन संदर्भ में नारी की बदलती हुई मानसिकता को लेकर अनेक महिला कहानीकारों ने नारी के बहु–आयामी व्यक्तित्व की पहचान

तथा वास्तविकता को समझकर व्यक्ति और समाज के अत्याचारों का समाना पूरी शक्ति के साथ कर सके इसलिए उनको आत्मविश्वासी और नीडर बना रही हैं।

आज की स्त्री धीरे–धेरे परिवर्तित हो रही हैं। नई दिषा की ओर बढ़ने के लिए उसने संघर्षात्मक रवैया अपना लिया है। समाज से स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के लिए षिक्षा की अनिवार्यता को स्त्रियों ने महसूस किया। षिक्षा से प्राप्त आत्मविश्वास ने नारी में एक नई चेतना जागृत की जिसके आधार पर समूची सामाजिक एवं पारिवारिक मान्यताएँ नैतिक नियम आदि पुर्नविचार के विषय बन गये अर्थात् रूढ़ियाँ , परंपरागत जीर्ण मान्यताएँ , अन्ध विश्वास धीरे धीरे समाज से रिसने लगा। समाज के इस बदलाव को स्वातंत्र्योत्तर लेखिकाओं ने सूक्ष्मता से परखकर अपनी रचनाओं में शब्दबद्ध किया है। इन लेखिकाओं ने एक ओर परम्परा को सराहा है तो दूसरी ओर रूढ़ियों को उखाड़ फेंकने का आहवान भी किया हैं।

इन महिला कहानीकारों की कहानियों में विषय की नवीनता और कथ्य का मौलिक रूप देखने को मिलता हैं। इन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य को सशक्त और सार्थक बनाया है। सन् आठ के बाद में महिला कहानीकार हिन्दी साहित्य में उभरी है वह परंपरा से हटकर अपनी विशिष्टता को लेकर ही उभरी है। जिनमें उनकी कहानियाँ सर्वहारा वर्ग की नारी के प्रति संवेदना अंकित करते हुए नारी के मातृत्व रूप को गौरव प्रदान करती है। इनमे चित्रा जी भी एक हैं चित्रा जी ने अपनी कहानियों में नारी की अनुभूति के साथ नए पुराने मूल्यों के संघर्ष को, नारी के जीवन में प्रेम के त्रिकोण को भी प्रभावशाली अभिव्यक्ति दी है। बदलते नारी–पुरुष संबंध, नारी की अस्मिता की लडाई, नए मूल्यों की स्वीकृति, पुरानी रुढ़ियों के प्रति विद्रोह, नारी की परिवर्तित मनःस्थिति और के वजूद का प्रश्न, खोखली मानसिकता का सूक्ष्म चित्रण उन्होंने किया है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र या विषय नही है जिसे लेकर चित्रा जी ने कहानियाँ न लिखी हो। आधुनिक जीवन की चुनौतियों को स्वीकार कर यथार्थ जीवन की बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति उन्होनें की है मध्यमवर्गीय जीवन की छटपटाहट की सार्थक अभिव्यक्ति इनकी कहानियों में हुई हैं। वास्तव में समकालीन महिला कहानीकारों में चित्रा जी का महत्वपूर्ण स्थान एवं योगदान रहा हैं। इनकी कहानियाँ हिन्दी कहानी साहित्य की एक बड़ी उपलब्धि हैं।

संदर्भ–सूची

1 आजकल पत्रिका, पृष्ठ 15–18

2 जगदम्बा बाबू गांव आ रहे है, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 11

3 मेरे साक्षातकार– विज्ञान भूषणपृष्ठ 199

4 चर्चित काहानियां, पाठकों की सत्ता से, चित्रा मुद्गल, पृष्ठ 4, 5

5 हंस पत्रिका, जून 1987, श्री प्रकाष, पृष्ठ 91

6 राष्ट्रीय सहारा–11, नबम्बर 2002, धनंजय कुमार,पृष्ठ 9